ये रिसाला आ़ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत रदियल्लाहो त'आला अनहो का एक फतवा है जो आपने इमाम अबू यूसुफ के दिफा में तहरीर फरमाया है, ग़ैर मुक़ल्लीदीन के एक मश्हूर ऐतराज़ का जवाब बड़े ही जबरदस्त तरीक़े से दिया गया है।

# इमाम अबू यूसुफ का दिफा


अज़ क़लम:

इमामे अहले सुन्नत,

आ़ला ह़ज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला


SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

किताब या रिसाले का नाम

# इमाम अबू यूसुफ का दिफा

| | |
|---|---|
| मुसन्निफ़/मुअल्लिफ़ : | इमामे अहले सुन्नत, आ़ला हज़रत |
| ज़ुबान : | हिन्दी |
| मौज़ू : | दिफा -ए- अहले सुन्नत |
| तर्जुमा : | मौलाना मुहम्मद उमर रज़ा ख़ाँ |
| डिज़ाइनिंग : | प्योर सुन्नी ग्राफिक्स |
| सना इशाअ़त : | अक्टूबर 2022 |
| नाशिर : | साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन |
| सफ़हात : | 26 |

**अल्लाह** के
नाम से शुरू
जो निहायत मेहरबान,
रहमत वाला है।

रादिउत तअस्सुफ़ अनिल इमाम अबी यूसुफ़ (1318)
(हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि की जानिब एक मसअला को ग़लत मंसूब कर दिया गया है। इस रिसाला उसका जवाब दिया गया है।)

# इमाम अबू यूसुफ का दिफा

**तसनीफ़ लतीफ़ :**
आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी
बरकाती बरेलवी अलैहिर रहमा

**तर्जमा :**
नबीरा ए आला हज़रत, शहज़ादा ए क़मरुल उलमा, मौलाना मुहम्मद उमर रज़ा ख़ाँ क़ादरी नूरी बरेलवी

**नाशिर**
**साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन**

## फ़ेहरिस्त

किसी भी उन्वान पर क्लिक करें और मुतल्लिक़ा सफ़्हे पर जाएं।

**मसअला 79 :**

अज़ गोंडा, मुल्क अवध, मदरसा इस्लामिया, मुरसलहु : हाफ़िज़ अब्दुल्लाह साहिब, मुदर्रिस मदरसा मज़कूर, 16 जुमादल आख़िर 1318 हिजरी __ किताब ग़फ़रुल मुबीन, मुअल्लिफ़ुहु मुहीउद्दीन, ग़ैर मुक़ल्लिद में लिखा है कि जनाब क़ाज़ी अबू यूसुफ़ आख़िर साल पर अपना माल अपनी बीबी के नाम हिबा कर दिया करते थे और उसका माल अपने नाम हिबा करा लिया करते थे ताकि ज़कात साक़ित हो जाए यह बात किसी ने इमाम अबू हनीफ़ा साहिब से नक़ल की, उन्होंने फ़रमाया कि यह उनकी फ़िक़्ह की जहत से है और दुरुस्त फ़रमाया, चुनांचे इस अम्र को एक आलिम मुक़ल्लिद ने भी तसदीक़ किया बल्कि यह कहा इस मुआमले को इमाम बुख़ारी साहिब ने भी दर्ज ए किताब किया है और बहुत नफ़रत के साथ लिखा है। इसकी तशरीह व तौज़ीह व मुदल्लल इरशाद फ़रमाई जाए।

**अलजवाब :**

بسم الله الرحمٰن الرحيم

اللهم لك الحمد صل وسلم على سيد انبيائك واله وصحبه وسائر اصفيائك اسألك حبك وحب احبائك وحسن الادب مع جميع اوليائك واعوذبك من غضبك وسخطك وسوء بلائك۔

**अव्वलन :** सहीह बुख़ारी शरीफ़ में अव्वल ता आख़िर कहीं इस हिकायत का पता नहीं कि इमाम अबू यूसुफ़ इसके आमिल थे, इमाम ए आज़म मुसद्दिक़ हुए, इमाम बुख़ारी ने सिर्फ़ इस क़दर लिखा कि बाज़ उलमा के नज़दीक अगर कोई शख़्स साल ए तमाम से पहले माल को हलाक कर दे या दे डाले या बेचकर बदल ले कि ज़कात वाजिब न होने पाए तो उस पर कुछ वाजिब न होगा और

हलाक करके मर जाए तो उसके माल से कुछ न लिया जाएगा और साल ए तमाम से पहले अगर ज़कात अदा कर दे तो जाइज़ व रवा। उनकी इबारत यह है,

وقال بعض الناس فی عشرین ومائۃ بعیر حقتان فان اھلکھا متعمدا او وھبھا او احتال فیھا فرارا من الزکوۃ فلا شئی علیہ۔

फिर कहा,

وقال بعض الناس فی رجل لہ ابل فخاف ان تجب علیہ الصدقۃ فباعھا بابل مثلھا او بغنم او ببقر او بدراھم فرارا من الصدقۃ بیوم واحتیالا فلا شئی علیہ وھو یقول ان زکی ابلہ قبل ان یحول الحول بیوم او بسنۃ جازت عنہ۔

फिर कहा,

وقال بعض الناس اذا بلغت الابل عشرین ففیھا اربع شیاہ فان وھبھا قبل الحول او باعھا فرارا او احتیالا لاسقاط الزکوۃ فلا شئی علیہ وکذلك ان اتلفھا فمات فلا شئی فی مالہ۔

इसमें न उस हिकायत का कहीं निशान, न इमाम ए आज़म ख़्वाह इमाम अबू यूसुफ़ का नाम, एक मसअला में बाज़ उलमा का मज़हब नक़ल किया है कि कोई ऐसा करे तो उस पर कुछ वाजिब न होगा

**सानियन :** हमारे कुतुब ए मज़हब ने इस मसअला में इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रहमहुमाल्लाहि तआला का इख़्तिलाफ़ नक़ल किया और साफ़ लिख दिया कि फ़तवा इमाम मुहम्मद के क़ौल पर है कि ऐसा फ़ेअ्ल जाइज़ नहीं। तनवीरुल अबसार व दुर्र ए मुख़तार व जौहरा वग़ैरहा में है,

و اللفظ للاولين ( تکرہ الحیلۃ لاسقاط الشفعۃ بعد ثبوتها وفاقا ) کقوله للشفیع اشترہ منی ذکرہ البزازی ( و اما الحیلۃ لدفع ثبوتها ابتدأ فعند ابی یوسف لا تکرہ و عند محمد تکرہ و یفتی بقول ابی یوسف فی الشفعۃ ) قیدہ فی السراجیۃ بما اذ کان الجار غیر محتاج الیه و استحسنۃ محشی الاشباہ ( و بضدہ ) و ھو الکراھۃ ( فی الزکوۃ ) و الحج و اٰیۃ السجدۃ جوھرۃ۔

रद्दुल मोहतार में शरह ए दुरारुल बिहार से है,

ھذا تفصیل حسن۔

ग़मज़ुल उयून में है,

الزکوۃ علی عدم جواز الحیلۃ لاسقاط الزکوۃ و ھو قول محمد رحمه اللّٰه تعالیٰ و ھو المعتمد۔

मजमउल अनहर में शरहुल कंज़ लिल ऐनी से है,

المختار عندی ان لا تکرہ فی الشفعۃ دون الزکوۃ۔

वक़ाया व इस्लाह व ईज़ाह में है,

و اللفظ لھذین لا یکرہ حیلۃ اسقاط الشفعۃ الزکوۃ عند ابی یوسف خلافا لمحمد و یفتی فی الاول بقول الاول و فی الثانی بقول الثانی۔

इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह, हज़रत सय्यिदुना इमाम ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु का मज़हब भी यही मज़हब ए इमाम मुहम्मद है कि ऐसा फ़ेअ्ल ममनूअ् व बद है। ग़मज़ुल उयून में तातारख़ानिया से है,

کان ممنوع مکروھا عند الامام و محمد۔

तो इमाम की तरफ़ वह निस्बत ए तसवीब कि उन्होंने फ़रमाया (अबू यूसुफ़

ने दुरुस्त फ़रमाया) ख़ुद मज़हब ए इमाम के सरीह ख़िलाफ़ है।

सालिसन : बल्कि ख़िज़ानतुल मुफ़्तीयीन में फ़तावा कुबरा से है,

الحیلۃ فی ابطال الشفعۃ بعد ثبوتہا یکرہ لانہ ابطال لحق واجب و اما قبل الثبوت فلا باس بہ و ھو المختار و الحیلۃ فی منع وجوب الزکوۃ تکرہ بالاجماع۔

यहाँ से साबित कि हमारे तमाम अइम्मा का उसके अदम ए जवाज़ पर इजमा है, हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ भी मकरूह रखते हैं, ममनूअ् व नाजाइज़ जानते हैं कि मुतलक़ कराहत, कराहत ए तहरीम के लिए है ख़ुसूसन नक़्ल ए इजमा कि यहाँ हमारे सब अइम्मा का मज़हब मुत्ताहिद बता रही है और शक नहीं कि मज़हब ए इमाम ए आज़म व इमाम मुहम्मद इस हीला का नाजाइज़ होना है, ग़मज़ुल उयून के लफ़्ज़ सुन चुके कि साफ़ अदम ए जवाज़ की तसरीह है।

अक़ूल : अगर बितज़ाफ़ुर नुक़ूल ब ग़रज़ ए तौफ़ीक़ इस रिवायत ए इजमा में कराहत को माना ए आम पर हमल करें,

فربما تجئی کذا کقولھم فی الصلوۃ کرہ کذا و کذا و ارادوا بہ المکروھات من القسمین۔

तो हासिल यह होगा कि इस हीला के मकरूह व नापसंद होने पर हमारे अइम्मा का इजमा है, ख़िलाफ़ इसमें है कि इमाम अबू यूसुफ़ मकरूह ए तनज़ीह फ़रमाते हैं और इमाम ए आज़म व इमाम ए मुहम्मद मकरूह ए तहरीमी। और फ़क़ीर ने ब चश्म ए ख़ुद इमाम अबू यूसुफ़ रदि अल्लाहु तआला अन्हु की मुतावातिर किताब ए मुसतताब 'अल ख़िराज' में यह इबारत शरीफ़ा मुतालअ् की (मतबअ् ए अमीरी बुलाक़, मिस्र, सफ़हा 45)

قال ابو یوسف رحمہ اللہ لا یحل لرجل یؤمن باللہ و الیوم الاٰخر منع الصدقۃ و

لا اخراجها من ملكه الى ملك جماعة غيره ليفرقها بذلك فتبطل الصدقة عنها بان يصير لكل واحد منهم من الابل و البقر و الغنم ما لا يجب فيه الصدقة و لا يحتال فى ابطال الصدقة بوجه و لا سبب بلغنا عن ابن مسعود رضى الله تعالىٰ عنه انه قال ما مانع الزكوة بمسلم و من لم يؤدها فلا صلوة له۔

यानी इमाम अबू यूसुफ़ फ़रमाते हैं किसी शख़्स को जो अल्लाह व क़यामत पर ईमान रखता हो, यह हलाल नहीं कि ज़कात न दे या अपनी मिल्क से दूसरे की मिल्क में दे दे जिससे मिल्क मुताफ़र्रिक़ हो जाए और ज़कात लाज़िम न आए कि अब हर एक के पास निसाब से कम है और किसी तरह किसी सूरत इब्ताल ए ज़कात का हीला न करे, हमको इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु से हदीस पहुंची है कि उन्होंने फ़रमाया, ज़कात न देने वाला मुसलमान नहीं रहता और जो ज़कात न दे उसकी नमाज़ मरदूद है। फ़तावा ए कुबरा व ख़िज़ानतुल मुफ़्तीयीन की नक़ल ए इजमा इबारत इतलाक़ की ताईद कर रही है और इतलाक़ उस इजमा की, इमाम अबू यूसुफ़ ने यह किताब मुसतताब ख़लीफ़ा हारून के लिए तसनीफ़ फ़रमाई है जबकि इमाम ख़िलाफ़त ए हारूनी में क़ाज़ीउल क़ुज़्ज़ात व क़ाज़ीउश शर्क़ वल ग़र्ब थे, इसमें कमाल ऐलान ए हक़ के साथ ख़लीफ़ा को वह हिदायात फ़रमाईं हैं जो एक आला दर्जे के इमाम ए रब्बानी के शायान ए शान थीं कि अल्लाह के मुआमले में सुल्तान व ख़लीफ़ा किसी का ख़ौफ़ व लिहाज़ न करे और ख़लीफ़ा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने उन हिदायात को इस तरह सुना है जो एक ख़ुदा परस्त सुल्तान व अमीरुल मोमिनीन के लाइक़ है कि नसाइह ए अइम्मा व उलमा अगरचे ब ज़ाहिर तल्ख़ हों गोश ए क़बूल और उनके हुज़ूर फ़िरवत्नी करे।

यह ज़माना इमाम का आख़िरी ज़माना था, हाज़िरीन ए मजलिस ए मुबारक

सय्यिदुना इमाम ए आज़म या उसके बाद का क़रीब ज़माना जिसमें ख़िलाफ़ियात ए अइम्मा ए सलासा मनक़ूल हुईं हैं उससे मुताक़द्दिम था, तो इस तक़दीर पर नक़ल ए इजमा को ज़ाहिर से फेरने की हाजत नहीं, ततबीक़ यूँ होगी कि इमाम अबी यूसुफ़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने इस क़ौल से रुजूअ् फ़रमाई और उनका आख़िर क़ौल यही ठहरा जो उनके उस्ताज़ ए आज़म इमामुल अइम्मा और शागिर्द ए अकबर इमाम मुहम्मद का है, रदि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन। और एक इमाम ए दीन जब एक क़ौल से रुजूअ् फ़रमाए तो अब वह क़ौल उसका न रहा, न उससे उस पर ता'न रवा और न सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा पर ता'न किया जाए कि वह इब्तिदाअ् में जवाज़ ए मुताअह के मुद्दतों क़ाइल रहे हैं यहाँ तक कि अब्दुल्लाह इब्न ए ज़ुबैर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने अपने ज़माना ए ख़िलाफ़त में उनसे फ़रमाया कि अपने ही ऊपर आज़मा देखिए, अगर मुताअह करो तो मैं संगसार करूँ, आख़िर ज़माना में उससे रुजूअ् की और फ़रमाया, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने ज़ौजा व कनीज़ ए शरई, बस इन दो को हलाल फ़रमाया है,

فكل فرج سواهما حرام۔

इन दो के सिवा जो फ़र्ज है, हराम है।

رواه الترمذی۔

ज़ैद इब्न ए अरक़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु पर ता'न किया जाए कि वह पहले सूद की सूरतें हलाल बताते थे यहाँ तक कि उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि ज़ैद को ख़बर दे दो अगर वह इस क़ौल से बाज़ न आए तो उन्होंने जो हज व जिहाद रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हमराह रकाब किया, अल्लाह तआला उसे

बातिल फ़रमा देगा। - رواہ الدار قطنی

राबिअन : यह हिकायत किसी सनद ए मुस्तनद से साबित नहीं और बे सनद मज़कूर होना ता'न के लिए क्या नफ़्अ् दे सकता है वह भी ऐसी किताब में ख़ुसूसन जिसमें तो वह हदीसें ख़ुद रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ ऐसी मनसूब हैं जिनकी निस्बत अइम्मा ए हदीस ने जज़्म किया कि बातिल व मौज़ूअ् व मकज़ूब हैं।

ولکل فن رجال ولکل رجال مجال ویابی اللّٰہ العصمۃ الا لکلامہ ولکلام رسولہ صلی اللّٰہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

मुजतहिद के इज्तिहाद में किसी फ़ेअ्ल का जवाज़ आना और बात है और ख़ुद उसका मुरतकिब होना और बात, यह असातीन ए दीन ए इलाही बारहा अवाम के लिए रुख़सत बताते और ख़ुद अज़ीमत पर अमल फ़रमाते। सय्यिदुना इमाम ए आज़म, इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, मलिकुल अज़मह रदि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं,

لا احرم النبیذ الشدید دیانۃ ولا اشربہ مروءۃ۔

उनके शागिर्द के शागिर्द मुहम्मद इब्न ए मुक़ातिल राज़ी कहते हैं,

لو اعطیت الدنیا بحذافیرھا ما شربت المسکر یعنی نبیذ التمر والزبیب ولو اعطیت الدنیا بحذافیرھا ما افتیت بانہ حرام ذکرہ الامام البخاری فی الخلاصۃ۔

ख़ामिसन : इमाम हुज्जतुल इस्लाम ग़ज़ाली क़ुद्दिसा सिर्रुहुश शरीफ़ इहयाउल उलूम शरीफ़ में फ़रमाते हैं,

فان قیل ھل یجوز لعن یزید لانہ قاتل الحسین و امر بہ قلنا ھذا لم یثبت

اصلا فلا یجوز ان یقال انہ قتل او امر بہ ما لم یثبت فضلا عن اللعنۃ لانہ لا تجوز نسبۃ مسلم الی کبیرۃ من غیر تحقیق نعم یجوز ان یقال قتل ابن ملجم علیا و قتل ابو لؤلؤ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ فان ذلك ثبت متواترا فلا یجوز ان یرمی مسلم بفسق و کفر من غیر تحقیق۔

अक़ूल : यह फ़ेअ्ल इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि तआला से हिकायत किया जाता है, आया ख़ता ए इज्तिहादी है या इसकी क़ाबिलियत नहीं रखता बल्कि मआज़ अल्लाह अमदन फ़रीज़तुल्लाह से मुआनदत बर तक़दीर ए अव्वल उससे ता'न के क्या माना, मुजतहिद अपनी ख़ता पर सवाब पाता है अगरचे सवाब का सवाब दूना है और अगर इयाज़न बिल्लाह शिक़ ए सानी फ़र्ज़ की जाए तो फ़र्ज़ ए ख़ुद से मुआनदत क़तअन कबीरा है ख़ुसूसन वह भी बर सबील ए आदत जो (कर दिया करते थे) का मफ़ाद है ख़ुसूसन इस ज़ोम के साथ कि आख़िरत में इसका ज़रर हर गुनाह से ज़ाइद है तो मआज़ अल्लाह अकबरुल कबाइर हुआ फिर क्योंकर हलाल हो गया कि ऐसे सख़्त कबीरा शदीदा, न कि अकबरुल कबाइर को एक मुसलमान, न सिर्फ़ मुसलमान बल्कि इमामुल मुसलिमीन की तरफ़ बिला तवातुर, न फ़क़त बे तवातुर बल्कि महज़ बिला सनद सिर्फ़ हुकिया की बिना पर निस्बत कर दिया जाए। सुबहान अल्लाह यज़ीद पलीद की तरफ़ तो यह निस्बत नाजाइज़ व हराम हो कि उसने इमाम मज़लूम सय्यिदुना हुसैन रदि अल्लाहु तआला अन्हु को शहीद कराया इसलिए कि उसका हुक्म देना उस ख़बीस से मुतावातिर नहीं और सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि की तरफ़ ऐसी शदीद अज़ीम बात निस्बत करना हलाल ठहरे हालांकि तवातुर छोड़ अस्लन कोई टूटी फूटी सनद भी नहीं।

فقد تمت الحجۃ بالحجۃ علی الحجۃ و طھر بہ ذیل امام المحجۃ و اللہ الحجۃ

البالغة ول کل جواد کبوة و لکل صارم نبوة و لکل عالم هفوة و لقد صدق امام دار الهجرة عالم المدینة سیدنا الامام مالك بن انس رحمة الله تعالیٰ اذ یقول کل ماخوذ من قوله و مردود علیه الا صاحب هذا القبر صلی الله تعالیٰ علیه وسلم الا ان الذین فی قلوبهم زیغ فیتبعون هفوات بدرت مهما ندرت یبتغون الفتنة فی الدین و ایذاء قلوب المسلمین و الله المستعان علی الطاغین و المردة الباغین و لا حول و لا قوة الا بالله العلی العظیم۔

सादिसन : मुजर्रद इस्तिक़बाह व इस्तिबआद बे दलील ए शरई मसमूअ् नहीं, न अहकाम ए ज़ैद, अहकाम ए शरअ् पर हाकिम, नमाज़ में क़िल्लत ए ख़ुशूअ् को अहले सुलूक क्या क्या सख़्त व शुनीअ् मज़म्मतें नहीं करते, ऐसी नमाज़ को बातिल व मोहमल व फ़ासिद व मुख़तल समझते हैं और फ़ुक़हा का इजमा है कि ख़ुशूअ् न रुक्न ए नमाज़ है, न फ़र्ज़, न शर्त, मा नहनु फ़ीह का महल ए इज्तिहाद न होना मुख़ालिफ़ ने न बताया, न क़यामत तक बता सकता है फिर इज्तिहाद ए मुजतहिद पर ता'न क्या माना। फ़ेअ्ल अगर ब फ़र्ज़ ए ग़लत एक आध बार वुक़ूअ् ब सनद ए मोतमद साबित भी हो जाए तो करने और किया करने में ज़मीन आसमान का बल्ल है, न काना यफ़अलु तकरार में नस,

کما بیناه فی التاج المکلل فی انارة مدلول کان یفعل۔

वाक़िआ ए हाल मोहतमल ए सद इहतिमाल होता है, उरूज़ ए ज़रूरत या अम्र ए अहम या कुछ न सही तो बयान ए जवाज़ ही कि फ़ेअ्लन क़ौलन से अकमल व अतम और (यह उनकी फ़िक़्ह से है) तसवीब नहीं, इसके माना इस क़दर कि यह उनका इज्तिहाद है जिसका हासिल सिर्फ़ मना ए ता'न है कि मुजतहिद अपने इज्तिहाद पर मलाम नहीं जिस तरह अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने इकरिमा को जब उन्होंने अमीर ए

मुआविया रदि अल्लाहु तआला अन्हु की शिकायत की कि वित्र की एक रकअत पढ़ी, जवाब दिया,

دعه فانه فقیه۔

उन्हें कुछ न कह कि वह मुजतहिद हैं।

رواہ البخاری۔

हाँ दरबारा ए तसवीब व तसदीक़ यह हिकायत कुतुब में मनक़ूल है कि इमाम ज़ैनुल मिल्लत वद दीन अबू बक्र ख़्वाब में ज़ियारत ए अक़दस हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मुशर्रफ़ हुए, किसी शाफ़िउल मज़हब ने इमाम अबू यूसुफ़ का यह क़ौल हुज़ूर के सामने अर्ज़ किया, हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अबू यूसुफ़ की तजवीज़ हक़ है या फ़रमाया रास्त है। शरह ए निक़ाया में है,

وقد ایدہ ما صح عندنا ان افضل العلماء فی زمانہ و اکمل العرفاء فی اوانہ زین الملۃ و الدین ابوبکر التائبادی قد رأی فی المنام ان شافعی المذھب قال فی مجلس النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان ابا یوسف جوز حیلۃ فی اسقاط الزکوۃ فقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان ما جوزہ ابویوسف حق او صدق۔

साबिअन : बाद ए वुजूब मना का हीला बिल इजमा हराम ए क़तई है, यहाँ कलाम मना ए वुजूब में है यानी वह तदबीर करनी कि इब्तिदाअन ज़कात वाजिब ही न हो। इमाम अबू यूसुफ़ फ़रमाते हैं, इसमें कौन से हुक्म की नाफ़रमानी हुई, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने साल तमाम होने पर ज़कात फ़र्ज़ की जो बाद वुजूब अदा न करे बिल इजमा आसी है, यह कहाँ फ़र्ज़ किया है कि अपने माल पर साल गुज़र भी जाने दो, जिस तरह यह फ़र्ज़ फ़रमाया है कि जो ज़ाद व राहिला व क़ुदरत रखता हो, हज करे, यह कब फ़र्ज़ किया है कि ज़ाद

व राहिला व इस्तिताअत के क़ाबिल माल जमा भी करो यूँही हरगिज़ वाजिब क्या, मुसतहब भी नहीं कि क़दर ए निसाब माल जोड़कर साल भर रख छोड़ो ताकि ज़कात वाजिब हो, अइम्मा ए दीन को तालीम ए ग़ल की तरफ़ मनसूब करना बदगुमानी है जो अवाम मुसलिमीन पर भी जाइज़ नहीं और हक़ यह है कि इमाम ममदूह का यह क़ौल भी इसलिए नहीं कि लोग इसे दस्तावेज़ बनाकर ज़कात से बचें बल्कि वह वक़्त ए ज़रूरत व हाजत पर महमूल है मसलन किसी पर हज फ़र्ज़ हो गया था, माल चोरी हो गया, मसारिफ़ ए हज व नफ़क़ा ए अयाली के लिए हज़ार दिरहम की ज़रूरत है उससे कम में न होगा, मेहनत व कोशिश से जमा किए, आज काफ़िला जाने को है, कल साल ए ज़कात तमाम होगा अगर पच्चीस (25) दिरहम निकल जाएंगे, मसारिफ़ में कमी पड़ेगी, यह ऐसा हीला करे कि हज ए फ़र्ज़ से महरूम न रहे या कोई शख़्स अपने हाल को जानता है कि ज़कात उससे हरगिज़-हरगिज़ क़तअन न दी जाएगी, उसका नफ़्स ऐसा ग़ालिब है कि किसी तरह इस फ़र्ज़ की अदा पर अस्लन क़ुदरत न देगा, यह इस ख़्याल से ऐसा करे कि बाद ए फ़र्ज़ियत तर्क ए अदा व इर्तिकाब ए गुनाह से बचूँ तो अज़ क़बील,

من ابتلی ببلیتین اختارا ھونھما۔

होगा। सिराजिया में है,

اذا اراد ان یحتال لامتناع وجوب الزکوۃ لما انہ خاف ان لا یؤدی فیقع فی المأثم فالسبیل ان یھب النصاب قبل تمام الحول من یثق بہ و یسلمہ الیہ ثم یستوھبہ۔

देखो तसरीह है कि यह हीला गुनाह से बचने के लिए, न कि मआज़ अल्लाह गुनाह में पड़ने के वास्ते। हील ए शरईया का जवाज़ ख़ुद क़ुरआन व

अहादीस ए सय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से साबित है, अय्यूब अलैहिस सलातो वस्सलाम ने क़सम खाई थी कि अपनी ज़ौजा मुक़द्दसा को सौ (100) कोड़े मारेंगे, रब्बुल इज़्ज़त अज़्ज़ा जलालुहु ने फ़रमाया,

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهٖ وَلَا تَحْنَثْ۔

यानी सौ क़मचियों की एक झाड़ू बनाकर उससे एक दफ़अ् मार लो और क़सम झूटी न करो। हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक कमज़ोर शख़्स पर हद लगाने में इस हीला ए जमीला पर अमल फ़रमाया, इरशाद हुआ,

خذوا له عثكالا فيه مائة شمراخ ثم اضربوه به ضربة واحدة ۔

शाख़ा ए ख़ुरमा का एक गुच्छा लेकर जिसमें सौ शाख़ें हों, उससे एक बार मार दो।

رواه احمد و ابن ماجة و ابوداؤد و بمعناه البغوی فی شرح السنة الاولان عن ابی امامة بن سهل عن سعید بن سعد بن عبادة و الثالث عن ابی امامة بن سهل عن بعض الصحابة من الانصار و الرابع عن سعید بن سعد بن عبادة رضی الله تعالیٰ عنه اتی النبی صلی الله تعالیٰ علیه وسلم برجل الحدیث هذا حدیث حسن الاسناد و رواه الرؤیانی فی مسنده فقال حدثنا محمد بن المثنی نا عثمٰن بن عمر نا فلیح عن سهل بن سعد ان ولیدة فی عهد رسول الله صلی الله تعالیٰ وسلم حملت من الزنا فسئلت من احبلك فقالت احبلنی المقعد فسئل عن ذلك فاعترف فقال النبی صلی الله تعالیٰ علیه وسلم انه لضعیف عن الجلد فامر بمائة عثكول فضربه بها ضربة واحدة اه هكذا وقع فیما رأیت انما المعروف

ابن سهل سعيد بن سعد و فى اخرى لابن ماجة عن ابن سهل عن سعد بن عبادة و الله تعالىٰ اعلم۔

ख़ुद सहीह बुख़ारी शरीफ़ बल्कि सहीहैन में हज़रत अबू सईद व हज़रत अबू हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से है, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक साहिब को ख़ैबर पर आमिल बनाकर भेजा, वह उम्दा ख़ुरमे वहाँ से लाए, फ़रमाया, क्या ख़ैबर के सब ख़ुरमे ऐसे ही हैं। अर्ज़ की नहीं, या रसूल अल्लाह! वल्लाह कि हम छह (6) सेर ख़ुरमों के बदले यह ख़ुरमे तीन (3) सेर और नौ (9) सेर देकर इसके छह (6) सेर ख़रीदते हैं। फ़रमाया,

لا تفعل بع الجمع بالدراهم ثم ابتع بالدراهم جنيباً۔

ऐसा न करो बल्कि नाक़िस या पचमेल ख़ुरमे पहले रूपयों के एवज़ बेचो फिर उन रुपयों से उम्दा ख़ुरमे ख़रीदो। और हर मौज़ूं के बारे में यही हुक्म फ़रमाया, नीज़ सहीहैन में अबू सईद ख़ुदरी रदि अल्लाहु तआला अन्हु कि बर्नी छुहारे की उम्दा क़िस्म हैं, ख़िदमत ए अक़दस हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में हाज़िर लाए, फ़रमाया, यह कहाँ से आए हैं, अर्ज़ की, हमारे पास नाक़िस छुहारे थे, उनके छह (6) सेर देकर यह तीन (3) सेर लिए, फ़रमाया,

اوه عين الربا لا تفعل ذلك و لكن اذا اردت ان تشترى فبع التمر ببيع اخر ثم اشتر به۔

उफ़ ख़ास सूद है, ऐसा न करो, हाँ जब बदलना चाहो तो अपने छुहारे और चीज़ से पहले बेच फिर उससे अच्छे छुहारे मोल ले लो। यह शरई हीले नहीं तो और क्या हैं। बाब ए हील वसीअ् है. अगर कलाम को वुसअत दी जाए, ततवील

लाज़िम आए, अहले इंसाफ़ को इसी क़दर बस है। फिर जब अल्लाह व रसूल इजाज़त दें, तालीमें फ़रमाएं तो अबू यूसुफ़ पर क्या इल्ज़ाम आ सकता है। हाँ हमारे इमाम ए आज़म व इमाम मुहम्मद रदि अल्लाहु तआला अन्हुम ने यह ख़याल फ़रमाया कि कहीं इसकी तजवीज़ अवाम के लिए मक़सद ए शुनीअ् का दरवाज़ा खोले लिहाज़ा मुमानअत फ़रमा दी और अइम्मा ए फ़तवा ने इस मना पर ही फ़तवा दिया, इमाम बुख़ारी भी अगर इमाम मुहम्मद का साथ दें और यह क़ौल ए इमाम अबी यूसुफ़ पसंद न करें तो इमाम अबी यूसुफ़ की शान ए जलील को क्या नुक़सान

वह कौन सा मुजतहिद है जिसके बाज़ अक़वाल दूसरों को मुरज़्ज़ी न हुए, यह रद व क़बूल तो ज़माना ए सहाबा ए किराम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम से बिला नकीर राइज व मामूल है, न बुख़ारी के अक़वाल ए मज़कूरा में कोई कलिमा सख़्त नफ़रत का है, उनसे सिर्फ़ इतना निकलता है कि यह क़ौल उन्हें मुख़तार नहीं और हो भी तो उनकी नफ़रत इमाम मुजतहिद को क्या ज़रर दे सकती है ख़ुसूसन अइम्मा ए हनफ़िया ला सिय्यमा इमामुल अइम्मा, इमाम ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु व अन्हुम कि इमाम बुख़ारी के इमाम व मतबूअ् सय्यिदुना इमाम शाफ़ई रदि अल्लाहु तआला अन्हु जिनकी निस्बत शहादत देते हैं कि तमाम मुजतहिदीन इमाम अबू हनीफ़ा के बाल बच्चे हैं। हिफ़्ज़ ए हदीस व नक़्दुर रिजाल व तनक़ीह ए सेहत व ज़ोफ़ ए रिवायत में इमाम बुख़ारी का अपने ज़माने में पाया ए रफ़ीअ् वाला, साहिब ए रुतबा ए बाला, मक़बूल ए मुआसिरीन व मुक़तदा ए मुताख़िरीन होना मुसल्लम। कुतुब ए हदीस में उनकी किताब बेशक निहायत चीदा व इंतिख़ाब जिसके तआलीक़ व मुताबिआत व शवाहिद को छोड़कर उसूल ए मसानीद पर नज़र कीजिए तो उनमें गुंजाइश ए कलाम तक़रीबन शायद ऐसे ही मिले जैसे मसाइल ए सानिया

ए इमाम ए आज़म में और यह भी बि हम्दिल्लाह हनफ़िया व शागिर्दान ए अबू हनीफ़ा व शागिर्दान ए शागिर्द ए अबू हनीफ़ा मिस्ल इमाम अब्दुल्लाह इब्न ए मुबारक व इमाम याहया इब्न ए सईद क़त्तान व इमाम फ़ुज़ैल इब्न ए अयाज़ व इमाम मिसअर इब्न ए किदाम व इमाम वकीअ् इब्नुल जर्राह व इमाम लैस इब्न ए साद व इमाम मुअल्ला इब्न ए मंसूर राज़ी व इमाम याहया इब्न ए मुईन वग़ैरहुम अइम्मा ए दीन रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन का फ़ैज़ था कि इमाम बुख़ारी ने उनके शागिर्दों से इल्म हासिल किया और उनके क़दम पर क़दम रखा और ख़ुद इमाम बुख़ारी के उस्ताज़ ए अजल्ल इमाम मुहम्मद इब्न ए हंबल, इमाम शाफ़ई के शागिर्द हैं, वह इमाम मुहम्मद के, वह इमाम अबू यूसुफ़ के, वह इमाम अबू हनीफ़ा के, रदि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

मगर यह कार ए अहम ऐसा न था कि इमाम बुख़ारी इसमें मुस्तग़रक़ होकर दूसरे कार ए अजल्ल व आज़म यानी फ़क़ाहत व इज्तिहाद की भी फ़ुरसत पाते, अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने उन्हें ख़िदमत ए अलफ़ाज़ ए करीमा के लिए बनाया था, ख़िदमत ए मआनी अइम्मा ए मुजतहिदीन ख़ुससन इमामुल अइम्मा अबू हनीफ़ा का हिस्सा था। मुहद्दिस व मुजतहिद की निस्बत अत्तार व तबीब की मिस्ल है, अत्तार दवा शनास है, उसकी दुकान उम्दा उम्दा दवाओं से मालामाल है मगर तशख़ीस ए मर्ज़ व मआरिफ़त ए इलाज व तरीक़ ए इस्तिमाल तबीब का काम है, अत्तार ए कामिल अगर तबीब ए हाज़िक़ के मदार ए आलिया तक न पहुंचे, माज़ूर है ख़ुसूसन मलिक ए अतिब्बा ए हुज़्ज़ाक़, इमाम ए अइम्मा ए आफ़ाक़ जो सुरय्या से इल्म ले आया, जिसकी दिक़्क़त ए मक़ासिद को अकाबिर अइम्मा ने न पाया, भला इमाम बुख़ारी तो न ताबाईन से हैं, न तबअ् ए ताबाईन से, इमाम ए आज़म के पाँचवें दर्जे में जाकर शागिर्द हैं, ख़ुद हज़रत इमाम ए अजल्ल सुलेमान आमश कि अजिल्ला ए ताबाईन व इमाम ए

अइम्मा ए मुहद्दिसीन से हैं, हज़रत सय्यिदुना अनस इब्न ए मालिक अंसारी रदि अल्लाहु तआला अन्हु, ख़ादिम ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के शागिर्द और हमारे इमाम ए आज़म रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के उस्ताद, उनसे कुछ मसाइल किसी ने पूछे, उस वक़्त इमाम ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु भी वहाँ तशरीफ़ फ़रमा थे, इमाम आमश ने हमारे इमाम से फ़तवा लिया, हमारे इमाम ने सब मसाइल का फ़ौरन जवाब दिया, आमश ने कहा, यह जवाब आपने कहाँ से पैदा किए। फ़रमाया, उन हदीसों से जो मैंने ख़ुद आपसे सुनीं और वह अहादीस मअ् असानीद पढ़कर बता दीं। इमाम आमश ने कहा,

حسبك ما حدثتك به فی مائة یوم تحدثنی به فی ساعة واحدة ما علمت انك تعمل بهذه الاحادیث یا معشر الفقهاء انتم الاطباء ونحن الصیادلة وانت ایها الرجل اخذت بکلا الطرفین۔

यानी बस कीजिए, मैंने जो हदीसें सौ (100) दिन में बयान कीं, आपने घड़ी भर में मुझे सुना दीं, मुझे मालूम न था कि आप अहादीस में यह काम करते हैं, ऐ मुजतहिदो! तुम तबीब हो और हम मुहद्दिसीन अत्तार और ऐ अबू हनीफ़ा! तुमने दोनों किनारें घेर लिए। यह रिवायत इमाम इब्न ए हजर मक्की शाफ़ई वग़ैरह अइम्मा ए शाफ़ईया वग़ैरहुम ने अपनी तसानीफ़ ख़ैरातुल हिसान वग़ैरह में बयान फ़रमाई।

यह तो यह ख़ुद उनसे बदर्जहा अजल्ल व आज़म उनके उस्ताज़ ए अकरम व अक़दम इमाम आमिर शाअ्बी जिन्होंने पाँच सौ (500) सहाबा ए किराम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम को पाया, हज़रत अमीरुल मोमिनीन मौला अली व साद इब्न ए अबी वक़ास व सईद इब्न ए ज़ैद व अबू हुरैरा व अनस इब्न ए मालिक व अब्दुल्लाह इब्न ए उमर व अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास व

अब्दुल्लाह इब्न ए ज़ुबैर व इमरान इब्न ए हुसैन व जरीर इब्न ए अब्दुल्लाह व मुग़ीरा इब्न ए शोअ्बा व अदी इब्न ए हातिम व इमाम ए हसन व इमाम हुसैन वग़ैरहुम ब कसरत असहाब ए किराम ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के शागिर्द और हमारे इमाम ए आज़म रहमतुल्लाहि तआला के उस्ताज़ जिनका पाया ए रफ़ीअ् हदीस में ऐसा था कि फ़रमाते हैं, बीस (20) साल गुज़रे हैं, किसी मुहद्दिस से कोई हदीस मेरे कान तक ऐसी नहीं पहुंची जिसका इल्म मुझे उस मुहद्दिस से ज़ाइद न हो। ऐसे इमाम ए वाला, मक़ाम ए ब आँ जलालत ए शान फ़रमाते हैं,

انا لسنا بالفقھاء ولکنا سمعنا الحدیث فرویناہ للفقھاء من اذا علم عمل۔

हम लोग फ़क़ीह व मुजतहिद नहीं, हमने तो हदीसें सुनकर फ़क़ीहों के आगे रिवायत कर दीं जो उन पर मुत्तलाअ् होकर कारवाई करेंगे।

نقلہ الزین فی تذکرۃ الحفاظ۔

काश इमाम ए अजल्ल सय्यिदुना इमाम बुख़ारी अलैहिर रहमतुल बारी अगर फ़ुरसत पाते और ज़्यादा नहीं दस (10) बारह (12) बरस इमाम हफ़्स कबीर बुख़ारी वग़ैरह अइम्मा ए हनफ़िया रहमहुमुल्लाहि तआला से फ़िक़्ह हासिल फ़रमाते तो इमाम अबू हनीफ़ा के अक़वाल शरीफ़ की जलालत ए शान व अज़मत ए मकान से आगाह हो जाते, इमाम अबू जाफ़र तहावी हनफ़ी की तरह अइम्मा ए मुहद्दिसीन व अइम्मा ए फ़ुक़हा दोनों के शुमार में यकसाँ आते मगर तक़सीम ए अज़ल्ल जो हिस्सा दे,

ھر کسے را بھر کارے ساختند۔ میل او اندر دلش انداختند۔

और इंसाफ़न यह तमन्ना भी अबस है, इमाम बुख़ारी ऐसे होते तो इमाम बुख़ारी ही न होते, इन ज़ाहिरबीनों के यहाँ वह भी अइम्मा ए हनफ़िया की तरह

मातूब व मायूब क़रार पाते,

فالی اللہ المشتکی و علیہ التکلان۔

बिल जुमला हम अहले हक़ के नज़दीक हज़रत इमाम बुख़ारी को हुज़ूर पुरनूर इमाम ए आज़म से वही निस्बत है जो हज़रत अमीर ए मुआविया रदि अल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर पुरनूर अमीरुल मोमिनीन मौला अल मुसलिमीन सय्यिदुना व मौलाना अलीयुल मुर्तज़ा कर्रमाल्लाहु तआला वजहहुल असना से कि फ़र्क़ ए मरातिब बेशुमार और हक़ ब दस्त ए हैदर ए कर्रार मगर मुआविया भी हमारे सरदार, तान उन पर भी कार ए फ़ुज्जार, जो मुआविया की हिमायत में इयाज़न बिल्लाह असदुल्लाह के सबक़त व अव्वलियत व अज़मत व अकमलियत से आँख फेर ले वह नासिबी यज़ीदी और जो अली की महब्बत में मुआविया में सहाबियत व निस्बत ए बारगाह ए हज़रत ए रिसालत भुला दे वह शिया ज़ैदी। यही रविश ए आदाब बि हम्दिल्लाहि तआला हम अहले तवस्सुत व एतिदाल को हर जगह मलहूज़ रहती है, यही निस्बत हमारे नज़दीक इमाम इब्नुल जौज़ी को हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौस ए आज़म और मौलाना अली क़ारी को हज़रत ख़ातम ए विलायत ए मुहम्मदिया शेख़ ए अकबर से है, न हम बुख़ारी व इब्न ए जौज़ी व अली क़ारी के एतिराज़ों से शान ए रफ़ीअ् ए इमाम ए आज़म व ग़ौस ए आज़म व शेख़ ए अकबर रदि अल्लाहु तआला अन्हुम पर कुछ असर समझें, न इन हज़रात से कि ब वजह ए ख़ता फ़िल फ़हम मोअ्तरिज़ हुए, उलझें, हम जानते हैं कि उनका मंशा ए एतिराज़ भी नफ़सानियत न था बल्कि उन अकाबिर महबूबान ए ख़ुदा के मदारिक ए आलिया तक दर्स ए इदराक न पहुंचना व बस, ला जरम एतिराज़ बातिल और और मोअ्तरिज़ माज़ूर और मोअ्तरिज़ अलैहिम की शान अरफ़ा व अक़दस।

و الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوۃ و السلام علی سید المرسلین محمد و اٰلہ و صحبہ و اولیائہ و علمائہ و اہلہ و حزبہ اجمعین اٰمین و اللّٰہ تعالیٰ اعلم و علمہ جل مجدہ اتم و احکم۔

تمت بالخیر

العطایا النبویہ فی الفتاوی الرضویہ،

ج ۴/۱۲، ص ۴۴۱-۴۴۹ و ج ۱۰/۳۰، ص ۱۸۷-۲۰۲

المشتہر ــ حضرت قمر رضا فاؤنڈیشن ــ بریلی شریف۔

## हिंदी में हमारी दूसरी किताबें

(1) बहारे तहरीर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इल्मी तहक़ीक़ी और इस्लाही तहरीरों पर मुश्तमिल एक गुलदस्ता जिसके अब तक 14 हिस्से रिलीज़ हो चुके हैं, हर हिस्से में 25 तहरीरें हैं जो मुख्तलफ़ मौज़ूआत (टॉपिक्स) पर हैं।
(2) अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस रिसाले में कई हवालों से साबित किया गया है कि अल्लाह त'आला को ऊपर वाला या अल्लाह मियाँ कहना जाइज़ नहीं है।
(3) अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में हज़रते बिलाल के अज़ान ना देने पर सूरज ना निकलने का ज़िक्र है।
(4) इश्क़े मजाज़ी (मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस रिसाले में कई अहबाब के मज़ामीन शामिल किये गए हैं जो इश्के मजाज़ी के ताल्लुक़ से हैं, इश्के मजाज़ी के मुख़्तलफ़ पहलुओं पर ये एक हसीन संगम है।
(5) गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो! - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस मुख़्तसर से रिसाले में गाने बजाने की मज़म्मत पर कलाम किया गया है और गानों के कुफ्रिया अशआर बयान किये गए हैं जिसे पढ़ कर कई लोगों ने गाने बजाने से तौबा की है।
(6) शबे मेराज गौसे पाक - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस रिसाले में एक मशहूर वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है जिस में हज़रते ग़ौसे आज़म का शबे मेराज हमारे नबी अलैहिस्सलाम से मिलने का ज़िक्र है।
(7) शबे मेराज नालैन अर्श पर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में मेराज की शब हुज़ूर नबी -ए- करीम अलैहिस्सलाम का नालैन पहन कर अर्श पर जाने का ज़िक्र है।
(8) हज़रते उवैस क़रनी का एक वाक़िया - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस रिसाले में हज़रते ओवैस क़रनी के अपने दंदान शहीद कर देने वाले वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है और साथ ये भी कि अल्लाह के आख़िरी रसूल अलैहिस्सलाम के दंदान शहीद हुए थे या नहीं और हुए तो उसकी कैफ़ियत क्या थी और कई तहक़ीक़ी निकात शामिले बयान हैं।
(9) डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
ये रिसाला मज्मुआ है उन फ़तावा का जो हज़रते अल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादरी अलैहिर्रहमा ने डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी के लिये लिखे हैं, ये फ़तावा डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी की गुमराही को बयान करते हैं।
(10) ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई दलाइल से साबित किया गया है कि सहाबा के अलावा भी तरद्दी (यानी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु) का इस्तिमाल किया जा सकता है।

(11) चंद वाक़ियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

वाक़ियाते कर्बला के हवाले से अहले सुन्नत में बेशुमार वाक़ियात ऐसे आ गए हैं, जो शिओं की पैदावार हैं, इस रिसाले में हमने चंद वाक़ियात की तहक़ीक़ पेश की है जो कि अपनी नोइयत का मुन्फ़रिद काम है, इस तहक़ीक़ी रिसाले में कई इल्मी निकात मरक़ूम हैं।

(12) बिन्ते हव्वा (एक संजीदा तहरीर) कनीज़े अख़्तर

औरत की ज़िंदगी में पैदाइश से ले कर निकाह और फिर बादहू के मामलात की इस्लाह के लिये इस रिसाले को एक अलग अंदाज़ में लिखा गया है।

(13) सेक्स नॉलेज (इस्लाम में सोहबत के आदाब) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में जिंसी ताल्लुक़ात और इस हवाले से जदीद मसाइल पर ये रिसाला बड़े ही आम फ़हम अंदाज़ में लिखा गया है और आसान होने के साथ-साथ ये रिसाला दलाइल से मुज़य्यन भी है।

(14) हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाक़िए पर तहक़ीक़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ मशहूर वाक़ियात की तहक़ीक़ पर ये रिसाला लिखा गया है, कई हवालों से अस्ल रिवायत और उनकी कैफ़ियत को अम्बिया की अज़मत को मद्दे नज़र रखते हुए बयान किया गया है।

(15) औरत का जनाज़ा - जनाबे ग़ज़ल साहिबा

औरत के जनाज़े को कौन कौन देख सकता है? क्या शौहर काँधा नहीं दे सकता? और ऐसे कई सवालात के जवाब आपको इस रिसाले में मिलेंगे।

(16) एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

एक आशिक़ की बड़ी दिलचस्प कहानी है जिस में मज़ाह है, तफ़रीह है, सबक़ है और इबरत है। इस वाक़िए को अल्लामा इब्ने जौज़ी की किताब "ज़म्मुल हवा" से लिया गया है।

(17) आईये नमाज़ सीखें (पार्ट 1) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस किताब में नमाज़ पढ़ने और इससे मुताल्लिक़ ज़्यादा से ज़्यादा मसाइल को जमा करने की कोशिश की गई है, इस्तिलाहात को आसान अंदाज़ में बयान किया गया है, इस के अगले हिस्सों पर भी काम जारी है।

(18) क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में इस बात की तफ़्सील बयान की गई है कि क़ियामत के दिन लोगों को माँ के नाम के साथ पुकारा जाएगा या बाप के नाम से।

(19) शिर्क क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही

शिर्क के मौज़ू पे एक बेहतरीन किताब है जिस में शिर्क का असल मफ़हूम बयान किया गया है।

(20) इस्लामी तअ़लीम (हिस्सा अव्वल) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अ़मजदी रहमतुल्लाह अलैह

ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(21) मुहर्रम में निकाह - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में बयान किया गया है कि माहे मुहर्रम में भी निकाह जाइज़ है और इसे नाजाइज़ कहना बिल्कुल गलत है, मुहर्रम में ग़म मनाना ये कोई इस्लामी रस्म नहीं और चाहे घर बनाना हो या मछली, अंडा और गोश्त वग़ैरह खाना सब मुहर्रम में जाइज़ है।

(22) रिवायतों की तहकीक़ (पहला हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला अहले सुन्नत में मशहूर रिवायतों की तहक़ीक़ पर मुश्तमिल है, इस में रिवायतों की तहक़ीक़ बयान की गई है, सहीह रिवायतों की सिह्हत पर और बातिल रिवायतों के मौज़ू व बेअस्ल होने पर दलाइल पेश किये गये हैं, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(23) रिवायतों की तहकीक़ (दूसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का दूसरा हिस्सा है, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(24) ब्रेक अप के बाद क्या करें? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला उन नौजवानों के लिये लिखा गया है जो इश्के मजाज़ी में धोखा खा कर अपनी ज़िंदगी के सफ़र को जारी रखने के लिये राह तलाश कर रहे हैं।

(25) एक निकाह ऐसा भी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये एक सच्ची कहानी है, एक निकाह की कहानी, इस में जहाँ इस्लामी तरीके से निकाह को बयान किया है वहीं इस पर अमल की कोशिश भी की गई है।

है तो ये एक कहानी पर इस में आप तहक़ीक़ी निकात भी मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे।

(26) काफ़िर से सूद - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में आप पढ़ेंगे कि एक काफ़िर और मुसलमान के दरमियान सूद की क्या सूरतें हैं? और साथ ही लोन, बैंक और पोस्ट इंटरेस्ट पर उलमा -ए- अहले सुन्नत की तहक़ीक़ भी शामिले रिसाला है।

(27) मैं खान तू अंसारी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में क़ौम, ज़ात और बिरादरी वग़ैरह की अस्ल पर ये एक तहक़ीक़ी किताब है, इस में मसवात को क़ाइम करने की तरग़ीब दिलाई गई है, कुफ़ू के मसअले पर तहक़ीक़ी मवाद भी शामिले किताब है।

(28) रिवायतों की तहकीक़ (तीसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का तीसरा हिस्सा है, इस के 2 हिस्सों का ज़िक्र हम कर आये हैं, इसके चौथे हिस्से पर काम जारी है।

(29) जुर्माना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला माली जुर्माने के मुताल्लिक़ लिखा गया है, माली जुर्माना फ़िक़्हे हनफ़ी में जाइज़ नहीं है और इसे दलाइल से साबित किया गया है।

(44) ला इलाहा इल्लल्लाह, चिश्ती रसूलुल्लाह? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला औलिया की एक खास हालत के बयान में है जिसे "सुकर" और "शत्हिय्यात" वग़ैरह से ताबीर किया जाता है। इस ताल्लुक़ से अहले सुन्नत के मुअतदिल मौक़िफ़ को दलाइल के साथ बयान किया गया है। ये रिसाला उनके लिये दावते फिक्र है जो इफ़रातो तफ़रीत के शिकार हैं।

(31) हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी

ये रिसाला औरतों के मख़सूस मसाइल पर मुश्तमिल है।

(32) रमज़ान और क़ज़ा -ए- उमरी की नमाज़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये मुख़्तसर सी तहक़ीक़ इस बयान में है कि क्या रमज़ान के आखिरी जुमूआ में किसी नमाज़ के पढ़ने से सारी क़ज़ा नमाज़ें माफ़ हो जाती हैं? इस तरह की रिवायतों की क्या अस्ल है?

(33) 40 अहादीसे शफ़ाअत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस रिसाले में शफ़ाअते मुस्तफ़ा के हवाले से 40 हदीसें लिखी गई हैं।

(34) बीमारी का उड़ कर लगना - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

ये किताब इस बात की तहक़ीक़ पर है कि बीमारी उड़ कर लग सकती है या नहीं यानी किसी एक को हुआ मर्ज़ किसी दूसरे में मुंतक़िल हो सकता है या नहीं।

(35) ज़न और यक़ीन - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा बरेलवी

ये रिसाला ज़न और यक़ीन के अहकाम पर लिखा गया है, इल्मे फ़िक़्ह पढ़ने वालों के लिये इस में कई इल्मी निकात हैं जिनसे वस्वसों को दूर किया जा सकता है।

(36) ज़मीन साकिन है - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस किताब में साबित किया गया है कि ज़मीन हरकत नहीं करती बल्कि ये साकिन (ठहरी हुई) है।

(37) अबू तालिब पर तहक़ीक़ - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस किताब में अबू तालिब के ईमान के मसअले पर जम्हूर अहले सुन्नत का मौक़िफ़ पेश किया गया है, यही मौक़िफ़ तहक़ीक़ से साबित है कि अबू तालिब ने इस्लाम कुबूल नहीं किया था।

(38) क़ुरबानी का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी

इस रिसाले में क़ुरबानी के फ़ज़ाइल और फ़िक़्ही मसाइल हैं जो कि बहारे शरीअत से माखूज़ हैं।

(39) इस्लामी तालीम (पार्ट 2) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

ये इस्लामी तालीम का दूसरा हिस्सा है ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(40) सफ़ीना -ए- बख़्शिश - ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान

ये किताब हुज़ूर ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान बरेलवी के कलाम का मज्मूआ है।

(41) मैं नहीं जानता - मौलाना हसन नूरी गोंडवी

ये मुख़्तसर सा रिसाला एक अहम पैग़ाम पर मुश्तमिल है कि उलमा व अवाम सबको चाहिये कि ला इल्मी का एतिराफ़ करने की आदत डालें और जहाँ इल्म न हो वहाँ तकल्लुफ़ कर के जवाब ना देते हुए कह दिया जाए कि मैं नहीं जानता।

(42) जंगे बद्र के हालात इख़्तिसार के साथ - मौलाना अबू मसरूर असलम रज़ा मिस्बाही कटिहारी

इस रिसाले में मुख़्तसर अल्फाज़ में जंगे बद्र के हालात को बयान किया गया है।

(43) तह़की़क़े इमामत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

ये किताब इमामते कुब्रा के बारे में है और इस बात की तह़की़क़ बयान की गई है कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते अ़ली की इमामत  के बारे में अहले सुन्नत का क्या नज़रिया है।

(44) सफ़रनामा बिलादे ख़मसा - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये एक सफ़रनामा है, हिंदुस्तान के 5 बिलाद के सफ़र के अहवाल पर मुश्तमिल है, इस के मुताले से जहाँ आप 5 बिलाद के मुताल्लिक़ मालूमात हासिल करेंगे वहीं कई इल्मी निकात भी आप मुलाहिज़ा फ़रमायेंगे।

(45) मंसूर हल्लाज - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये मुख़्तसर सा रिसाला हज़रते मंसूर हल्लाज रहीमहुल्लाहु त'आला के हालात पर है जिस में उलमा -ए-अहले सुन्नत की तहक़ीक़ को बयान किया गया है और हज़रते मंसूर हल्लाज के बारे में रखे जाने वाले नज़रियों को पेश कर के जाइज़ा लिया गया है।

(46) फ़र्ज़ी क़ब्रें - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये किताब 20 से ज़ाइद हवालों पर मुश्तमिल है जिस में फ़र्ज़ी कब्रों को बनाने की मज़म्मत बयान की गई है और इसके मुतल्लिक़ दुसरे कई अह़काम नक़ल किये गए हैं।

(47) इमाम अबू यूसुफ का दिफा - इमामे अहले सुन्नत, अ़ाला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला (ये किताब)

ये रिसाला अ़ाला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत रदियल्लाहो त'आला अनहो का एक फतवा है जो आपने इमाम अबू यूसुफ के दिफा में तहरीर फरमाया है, ग़ैर मुक़ल्लीदीन के एक मशहूर ऐतराज़ का जवाब बड़े ही जबरदस्त तरीक़े से दिया गया है।

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

**TO DONATE :**

Account Details :

**Airtel Payments Bank**

Account No.: 9102520764

(Sabir Ansari)

IFSC Code : AIRP0000001

**SCAN HERE**

**9102520764**

**OUR DEPARTMENTS:**

## ABOUT US

**Abde Mustafa Official** is a team from **Ahle Sunnat Wa Jama'at** working since 2014 on the Aim to propagate **Quraan and Sunnah** through electronic and print media.

**We are :**

blogging, publishing books and pamphlets in multiple languages on various topics, running a special matrimonial service for Sunni Muslims.

Visit our official website :

**www.abdemustafa.in**

about thousands of articles & 245+ pamphlets and books are available in multiple languages.

## E Nikah Matrimony

if you are searching a Sunni life partner then **E Nikah** is a right platform for you.

Visit **www.enikah.in**

Or join our Telegram Channel

t.me/enikah (search "E Nikah Service" in Telegram)


Follow us on Social Media Networks :

/abdemustafaofficial

For more details WhatsApp **+91 91025 20764**

**info@abdemustafa.in**


enikah
E NIKAH MATRIMONY SERVICE

POWERED BY: